आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 15 March 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *आज कल्प वृक्ष के जड़ें बन पुरे वृक्ष को अपने पवित्र शक्तिशाली वायब्रेशन्स से सींचने का पुरुषार्थ करे*

हम सभी स्मृति स्वरुप होकर अपनी स्थिति को बहुत महान बनाये। बाबा ने आकर हमें भिन्न-भिन्न स्मृतियाँ दिलाई है। और जगा दिया है हमारे चेतना को। जगा दिया है हमारी इनार फीलिंग्स को।

बाबा ने हमें याद दिलाया ....

" तुम कल्प वृक्ष की जड़ें हो "

हम जानते है जड़ों के द्वारा ही वृक्ष को भोजन पानी सबकुछ जाता है।

हम जड़ें है। हमारे द्वारा ही पूरे कल्प वृक्ष को शक्तियाँ जाती है। हमारे संकल्पों की एनर्जी पूरी कल्प वृक्ष में फैलती है।

एक विज़न बनाये ...

" मेरे सिर के ऊपर कल्प वृक्ष खड़ा है .. मेरी जो भी स्थिति है .. मेरी जो भी संकल्प है .. मेरी जैसी प्योरीटी है .. जैसा योग है .. उन सबके वायब्रेशन्स इस पूरी कल्प वृक्ष में फैल रहा है .. एक एक शाखा को जा रहा है "

अगर हम निगेटिव सोचते है तो निगेटिव एनर्जी भी सम्पूर्ण कल्प वृक्ष में फैल जाती है।

हमारी **प्योरीटी** की **पावर** सभी आत्माओं को सत्य कर्म करने का बल देती है। उन्हें निष्पाप बनाती है। तो हममें से बहुत सारी आत्मायें, देवकुल की महान आत्मायें कल्प वृक्ष के जड़ें है। और बाकी सारे सूर्य वंशी और चन्द्र वंशी कल्प वृक्ष के तने है।

तो हमें अपनी स्थिति पर बहुत ध्यान देना चाहिए। हमारी स्थिति साधारण रूप से न बीतें। हमें महान कर्तव्य करने है। हमारा जन्म ही महान कार्य के लिए हुआ है।

इसलिए इस स्मृति में सदा रहना है कि ...

" **मैं एक जिम्मेदार आत्मा हूँ** .. मैं साधारण नहीं हूँ .. इसलिए न तो मेरे अंदर अलवेलापन होना चाहिए .. न व्यर्थ और साधारण विचारों में जाने का एक **नेचुरल संस्कार** "

हम अपने विचारों को महान बनाये। अपने कार्य को महान बनाये। जितने विचार महान होंगे उतना ही हमारा जीवन महान होगा। हमारी स्थिति महान होगी।

और ...

जड़ें हमेशा आन्डारग्राउन्ड होता है। मिट्टी में होती है। और महिमा होती है फूलों की और फलों की। पर महत्वों सारा होता है जड़ों का। आकर्षण होता है फूलों की तरफ, फलों की तरफ।

हम भी जड़ें है। हम आन्डारग्राउन्ड है। हमें अपनी महिमा की कामना होनी ही नहीं चाहिए। क्योंकि जड़ों की महिमा नहीं होती है। जड़ें तो स्तम्भ होती है। जो पूरे वृक्ष के सहारा होती है।

जड़ें अगर बाहर निकल आती है किसी पौधे की, तो लोग उन्हें काट डालते है, उनकी दवाई बना लेते है। और इससे पेड़ कमजोर हो सकता है।

तो हम मान शान की इच्छा से परे श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रहे। और याद रखें...

"हमें तो स्वयं **भगवान** सम्मान दे रहा है .. **मनुष्य** से मान लेकर क्या करेंगे

तो आज सारा दिन हम इस स्वमान में रहेंगे ....

" मैं कल्प वृक्ष की जड़ें हूँ .. मेरे द्वारा पूरे वृक्ष को भोजन जाता है "

और बींच बींच में यह विज़न बनायेंगे कि ....

*" मेरे सिर के ऊपर पूरे **कल्प वृक्ष है** .. और मेरी योग की तरंगे .. मेरी आत्मा की शक्तियाँ .. पवित्र मन के पवित्र वायब्रेशन्स .. जैसे .. पूरे कल्प वृक्ष में फैल रहे है "*

बहुत सुन्दर अनुभूति होगी। इससे नेचुरल रूप से सेवा होती रहेगी। हर घन्टे में एकबार ....

" अपने सिर के ऊपर कल्प वृक्ष को निहारे .. और पूरे कल्प वृक्ष को श्रेष्ठ वायब्रेशन्स देते रहे "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org